International Journal of Advanced Research in Engineering Technology & Science ISSN: 2349-2819
Impact Factor: 7.10
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal)
Email: editor@ijarets.org Volume-12 Issue-3 March-2025 www.ijarets.org

ममता कालिया के साहित्य में नारी चेतना के वर्तमान स्वरूप का अध्ययन

डॉ0 धनेश कुमार मीणा, विभागाध्यक्ष,
हिन्दी विभाग
श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टीबडेवाला विश्वविद्यालय, चुडैला झुंझुनू राजस्थान

सारांश, नारी की विविध स्थितियों व दशाओं पर किया गया गहन अध्ययन व चिन्तन 'नारी–विमर्श' कहलाता है। 'क्या है नारी विमर्श? नारी पर विमर्श कभी थमता क्यों नहीं है? समाज का वह कौन सा सत्य है जो नारी को सदैव सुर्खियों में रखता है? कल भी और आज भी, नारी एक ओर जगत्जननी के रूप में दिखाई देती है तो दूसरी तरफ रतिस्वरूपा। जगत्जननी और रति का संघर्ष आज का नहीं है, यह सदियों पुराना है। लेकिन कल और आज में एक बृहत् अन्तर दिखाई देता है।'' शिक्षा का अभाव सर्वत्र व्यापक होने पर नारी ने भी कलम को पकड़ा और अपनी दास्तान लिखना आरम्भ किया, इसे नया नाम मिला 'नारी–विमर्श'। नारी की समस्या आज समाज की समस्या से पृथक् हो गई, समाज कहने लगा या समाज के प्रतिनिधि के रूप में पुरुष ने भी कहा कि यह नारी की समस्या है। कहीं–कहीं पुरुष ने अपना दम्भ दिखाना प्रारम्भ किया, वे कहने लगे कि नारी पर अत्याचार हो रहा है, लेकिन यह नहीं कहा कि नारी पर हम अत्याचार कर रहे हैं। बस केवल नारी को अबला बताने और सिद्ध करने में ही उनका पुरुषत्व लग गया। 'जब नारी घर की चारदीवारी से बाहर निकली तब उनमें भी पुरुष की तरह शोहरत पाने की ललक जाग उठी। शोहरत के मार्ग में तो काटे ही काटे हैं। पुरुष भी इन कांटों से होकर ही गुजरता है और जब नारी ने यह मार्ग चुना तब उसके लिए भी काटे बिछाए गए। शोहरत के दो मार्ग होते हैं, एक मार्ग बहुत लम्बा और दूसरा मार्ग बहुत सरल। पुरुष ने उस सरल मार्ग पर भी नारी के लिए काटे बिछा दिए। इस शोहरत के छोटे मार्ग ने भी नारी–विमर्श को जन्म दिया।''

मुख्य शब्द, नारी, घरेलू हिंसा, मातृत्व अवकाश, समान वेतन सम्बन्धी अधिकार, यौन उत्पीड़न, एव भेदभाव आदि।

प्रस्तावना, नारी विमर्श आधुनिक युग की एक महत्त्वपूर्ण विचारधारा है। नारी–विमर्श नारी चेतना का वाहक है। नारी–विमर्श सम्बन्धी राजनैतिक प्रचारों का जोर प्रजनन सम्बन्धी अधिकार, घरेलू हिंसा, मातृत्व अवकाश, समान वेतन सम्बन्धी अधिकार, यौन उत्पीड़न, भेदभाव एवं यौन हिंसा पर रहता है। नारीवादी विमर्श सम्बन्धी आदर्श का मूल कथ्य यही रहता है कि कानूनी अधिकारों का आधार लिंग न बने।[1] नारी विमर्श में नारी श्रम की महत्ता, उसके अधिकारों का रक्षण, उसका आर्थिक स्वावलम्बन, उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा व राजनीतिक वर्चस्व, नारी शिक्षा पर बल जैसे विषय विद्यमान हैं। यह उन पुरातन जंजीरों को तोड़ने में सक्षम है, जो नारी को परम्पराओं से बन्दी बनाए हुए हैं। अतः नारी विमर्श नारी चेतना का नया अध्याय लिखता है। नारी विमर्श ने हजारों वर्षों से चले आ रहे पितृ

सत्तात्मक सिद्धान्तों व परम्पराओं को चुनौती दी है। इस विमर्श ने पितृसत्तात्मक सत्ता के उन विरोधाभासों को तथा व्यर्थ भावनाओं को छिन्न–भिन्न कर दिया है जो नारी विरोधी हैं। नारी–विमर्श ने राजनीति, साहित्य, आलोचना तथा मनोविज्ञान की दुनिया में एक नई बहस को जन्म दिया। नारी–विमर्श पुरुष प्रधान समाज में स्त्रियों पर होने वाले अत्याचार और शोषण का विरोध करता है। यह नारी के देवी–दानवी रूपों के अतिरिक्त उसके मानुषी रूप पर भी प्रकाश डालता है।

'राकेश कुमार' ने भी स्त्री–विमर्श की व्याख्या इस प्रकार की है, ''स्त्री–विमर्श ने समाज–विज्ञान, मनोविज्ञान, राजनीति, साहित्य आलोचना, काव्यशास्त्र की दुनिया में एक नई बहस को जन्म दिया है कि स्त्री–दृष्टि का नया परिप्रेक्ष्य क्या है? वह पुरुष दृष्टि से पृथक कैसे है?'' 'प्रभा खेतान' ने नारीवाद सम्बन्धी दृष्टिकोण को व्यक्त करते हुए कहा है, ''नारीवाद स्वीकारता है कि हर स्त्री को सत्ता से न्याय मिलना चाहिए।[2] अभिव्यक्ति, जीवन और चुनाव की स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए। स्त्री नागरिक के प्रति राष्ट्र की जिम्मेदारी भी यही है। नासिरा शर्मा' नारी–विमर्श पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहती हैं, नारी–विमर्श द्वारा शताब्दियों से चले आ रहे अंकुश की जंजीरों को तोड़ा जाता है जो औरत की जबान और जज्बात को बांधे हुए हैं।[3]

हिन्दी में नारी–विमर्श का दायरा बेहद सिकुड़ा हुआ है। साहित्य के गलियारे से यह बाहर निकल नहीं पा रहा है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से नारी–विमर्श का लगभग अकाल है। हिन्दी में नारी–विमर्श के लिए (1) औरत और पर्यावरण (2) महिला श्रमिक व तकनोलॉजी (3) स्त्री और मीडिया (4) स्त्री आंदोलन (5) स्त्री और आधुनिकता (6) औरत विचारधारा और राज्य (7) स्त्री और आर्थिक –राजनीतिक स्वायतत्ता (8) स्त्री और सत्ता विकेन्द्रीयकरण (9) स्त्री और साम्प्रदायिकतावाद व आतंकवाद (10) स्त्री और भूमण्डलीकरण (11) सांस्कृतिक परिवर्तन और स्त्री (12) परिवर्तित सांस्कृतिक धार्मिक परिप्रेक्ष्य में स्त्री, जैसे मुद्दे लगभग अपरिचित हैं। नए सवाल नहीं उठाए जा रहे। वास्तव में हिन्दी में नारी–विमर्श सतहीकरण से पीड़ित है। सूक्ष्म व जटिल आयाम वाले विषयों को छूते हुए डर लगता है। पिछले कुछ वर्षों से नारी–विमर्श चर्चा में है। लेकिन हिन्दी कथा–साहित्य में यह कोई नया विषय नहीं।[4] 'प्रेमचन्द की निर्मला हो या सुनीता, यशपाल की शैल हो या अज्ञेय की रेवा–नारी अस्मिता का सवाल अपनी संपूर्णता एवं विविधता में कथा–साहित्य के केन्द्र में रहा है, लेकिन आज की वरिष्ठ एवं नई पीढ़ी की लेखिकाओं ने स्त्री की इस पुरुषरचित छवि पर सवाल खड़े किए है। हिन्दी कथा–साहित्य में उभरते हुए नई कहानी आन्दोलन में स्त्री जीवन से जुड़े सवाल उठाए गए। उषा प्रियम्बदा, मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, नासिरा शर्मा, मृणाल पाण्डे, मंजुल भगत, ममता कालिया और प्रभा खेतान जैसी दर्जनों कथाकारों ने पुरुष वर्चस्ववादी चार दीवारियों को तोड़ने का साहस किया। इस दौर में लिखे साहित्य में एक तरफ सामाजिक परम्पराओं एवं आर्थिक शिकन्जे में कैद स्त्री की छटपटाहट दर्ज थी तो दूसरी तरफ थी आधुनिकता की सीढ़ी लांघती स्त्री की उड़ान।

हिन्दी कथा–साहित्य में पुरुष कथाकारों से अधिक महिला कथाकारों ने ख्याति अर्जित की है। महिला कथाकारों ने कया–साहित्य में अपनी संवेदनशील भावनाओं एवं जागृत प्रतिभा का परिचय देकर हिन्दी कथा–साहित्य

को गौरवान्वित किया है। नारी हृदय का जितना सफल चित्रण लेखिकाएँ कर सकी हैं, उत्तना लेखकों के कथा–साहित्य में उपलब्ध नहीं है। नारी होने के नाते नारी–वर्ग की कठिनाइयों को इन कथा–लेखिकाओं ने सहजता एवं स्वाभाविकता से पकड़ा है, महिला कथाकार नारी हृदय की अद्‌भुत पारखी हैं। इन्होंने नारी हृदय की प्रतिपल धड़कन को यथावत् चित्रित करने का न केवल स्तुत्य प्रयास किया है, अपितु मन की सूक्ष्म परतों की गहराई में उत्तर कर उन्हें जानने, समझने व विश्लेषित करने का प्रयास किया है। इसी कारण पुरुष कथाकारों की परम्परा से अलग महिला कथाकारों ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। 'डॉ. उर्मिला गुप्ता' ने महिला कथाकारों के बारे में अपना मत प्रकट किया है, ''प्रकृति ने पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को विशेष भाव– प्रवण एवं संवेदनशील बनाया है जहाँ पुरुषों के लिए बुद्धिपरक विचारधारा सहज गुण है, वहाँ नारियों के लिए मानस में श्रद्धा, विश्वास, सवेदना, सहानुभूति आदि कोमल भाव अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में प्रकृतिस्थ रहते हैं। यही कारण है कि महिलाओं द्वारा प्रणीत साहित्य में हृदय को स्पर्श करने की क्षमता अथवा मार्मिकता का विशेष समावेश रहता है।''

लेखक 'बलराम' ने भी महिला लेखिकाओं की ओर इंगित करते हुए कहा, ''स्त्री के अन्तर्मन की बातें महिला कथाकार जिस गहराई और विश्वसनीयता से लिख सकती हैं पुरुष कथाकार नहीं।'' नारी मनोविज्ञान तथा स्त्री–पुरुष सम्बन्धों का गहन और सूक्ष्म विश्लेषण करने वाली लेखिका का नाम है– ममता कालिया। ममता कालिया का जन्म 2 नवम्बर 1940 को वृन्दावन में हुआ। होश संभालते ही उन्हें साहित्यिक परिवेश सहज उपलब्ध हुआ। इनके पिता स्व. श्री विद्याभूषण अग्रवाल आकाशवाणी में केन्द्र निर्देशक थे तथा अपनी बेबाक बयानी के लिए जाने जाते थे। ममता जी पर पिता के व्यक्तित्व की छाप साफ दिखाई देती है।[5]

प्रारम्भ में ममता कालिया कहानियाँ कम कविताएँ ज्यादा लिखती थी। 'बोल्ड' किस्म की कविताएँ लिखकर उन्होंने तमाम लेखकों का ध्यान आकर्षित किया।

'प्यार शब्द घिसते– घिसते चपटा हो गया है
अब हमारी समझ में सहवास आता है' जैसी साहसी कविताओं से लेखन आरम्भ कर ममता ने अपनी सामर्थ्य और मौलिकता का परिचय दिया और जल्द ही कथा–साहित्य की ओर मुड़ गई। उन्होंने अपने कथा–साहित्य में हाड–मास की स्त्री का चेहरा दिखाया। जीवन को जटिलताओं के बीच जी रहे उनके पात्र एक निर्भय और श्रेष्ठतर सुलूक की मांग करते हैं जहाँ आक्रोश और भावुकता की जगह सत्य और सन्तुलन का आग्रह है।[6] बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न ममता कालिया हिन्दी साहित्य के समकालीन महिला कथाकारों में विशेष व्यक्तित्व एवं महत्व रखती हैं। ममताजी का जन्म कृष्ण की भूमि वृदावन में 2 नवम्बर 1940 को हुआ था। उनका सारा बचपन मथुरा, उत्तर प्रदेश (भारत) में बीता। अपनी जन्मभूमि मथुरा की स्मृतियों के बारे में वे कहती हैं।''बचपन की यादों के बारे में कहना हो तो मुझे मथुरा या बृज की यमुना नदी और वहाँ पर चमड़े की शिलाओं के समान लगने वाले कछुए बहुत याद आते हैं। यमुना को मैंने कई स्पों में देखा है। कभी शांत मुद्रा में, कभी अंधकार में। मथुरा की गलियाँ, वहाँ के झूले मुझे अब भी याद है। उनकी माता का नाम इन्दुमती तथा पिता विद्याभूषण अग्रवाल, जो सम्भूदयाल कालेज के प्रिंसिपल तथा

अच्छे लेखक भी थे। कथा साहित्य में पिताजी की अधिक रचि थी जिसके कारण उनके घर में हमेशा साहित्यिक वातावरण बना रहता था। विष्णु प्रभाकर, जैनेन्द्र, अज्ञेय जैसे हिन्दी साहित्यकारों का घर में आना–जाना होता था और वे समकालीन विषयों पर चर्चा करते थे जिससे हिन्दी साहित्य का जीवन्त वातावरण सृजित होता था। आकाशवाणी के संपर्क में आने से उनके पिताजी का लेखन कार्य बंद हो गया। वे कई दिनों तक मुंबई रेडियो स्टेशन पर आसिस्टेंट डायरेक्टर के रूप में कार्यरत रहे। वे ब्राकाशवाणी के स्टेशन डायरेक्टर के रूप में भी कार्य करते थे। ममताजी की एक बहन है, जिसका नाम प्रतिभा है। नाम जैसे ही गुणों की धनी प्रतिभाजी बचपन से ही ललित कलाओं में निपुण थीं। शादी के पश्चात नौकरी कर ली, अब वे अवकाश प्राप्त कर चुकी है। ममताजी कहती है कि ''उसकी सारी वजह से मेरी ओर लोगों की उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाना मुझे अखर जाता था। उसकी शादी हो जाने के बाद मेरा कालेज जीवन काफी अच्छा रहा। लंबे अर्से तक मध्यप्रदेश के कालेज में किसी को यह नहीं पता था कि हम दोनों बहने हैं। दोनों बहने दो अलग ध्रुवों में केन्द्रित थीं।[7]

निष्कर्ष, ममताजी के पिताजी का हर दो साल बाद तबादला हो जाता था जिसके फलस्वस्य उन्हें स्कूल बदलना पड़ता था। मथुरा में यमुना का असीम स्नेह प्राप्त कर ममताजी ने गाजियाबाद, मुंबई, पूना, इन्दौर, दिल्ली जैसे महानगरों में शिक्षा प्राप्त की। उनकी प्राथमिक शिक्षा का आरंभ गाजियाबाद में हुआ है। उनकी संपूर्ण स्कूली शिक्षा कान्वेंट में अंग्रेजी माध्यम से हुई। पूना में उन्होंने एस एस. सी. की परीक्षा दी। सन 1961 में इन्दौर के विक्रम विश्वविद्यालय से स्नातक की परीक्षा उच्च श्रेणी में उत्तीर्ण की बीर दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी विषय से अनुस्नातक की उपाधि प्राप्त की। अनुस्नातक की पदवी प्राप्त करते ही दौलतराम महाविद्यालय, दिल्ली में प्राध्यापिका के रूप में नौकरी पायी। उसके पश्चात श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी महिला विश्वविद्यालय मुंबई में प्राध्यापिका के रूप में नियुक्त हुई। उन्होंने महिला सेवासदन डिग्री कालेज, इलाहाबाद में सन 1973 में प्राधानाचार्य के पद का दायित्व निभाया। अब वे अवकाश प्राप्त करके 'सेवाभाव' के उद्देश्य से नारीविन्तन के प्रति निरन्तर अपनी कलम चलाती है। प्रत्येक रचनाकार के साहित्यलेखन के अलग–अलग उद्देश्य होते हैं जो उसके लेखन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में प्रकट होते हैं। ममताजी खुद एक नारी है। बचपन से आज तक उन्होंने अपने जीवन में कई उतार–चढ़ाव देखे हैं। वे मानती है कि आधुनिक काल में नारी की प्रगति एक कदम आगे और दो कदम पीछे हो रही है। समाज में नारी शिक्षित तो हुई है, लेकिन पारंपरिक नियम, बंधन का भोग भी बनती है। कई परिवार ऐसे भी है। जहाँ स्त्री शिक्षा–दीक्षा प्राप्त करके अपनी इच्छा अनुसार जीवन व्यतीत करती है, लेकिन समाज में एक बड़ा वर्ग ऐसी नारियों का भी है जहाँ उन्हें अपनी इच्छाओं को दबाना पड़ता है, वे बद से बदत्तर जीवन जीती हैं। प्रचार–प्रसार माध्यमों ने नारी के आधुनिक रूप को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया लेकिन वहाँ पर भी नारी कठपुतली के समान ही संचालित होती है। उसके वैचारिक विकास को रास्ता नहीं मिलता। ममताजी कहती हैं–''नारी की स्थिति मेरी कल्पना में ऐसी होनी चाहिए कि उसका वैचारिक विकास हो, उसे वाणी मिले, उसे अपने विचारों को, अपने ब्रिद्रोह को दबाना न पड़े।'' नारी की यह स्थिति आधुनिक काल में है, इसलिए ममताजी अपने साहित्य में नारी के कई रूपों और उसके संघर्षों को दिखाकर अपने इस उद्देश्य तक पहुँचने का प्रयास करती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- कुमार, राकेश, लेखः स्त्रीत्व विमर्श वयो ? मारीवादी विमर्श, पंचकूला, आधार प्रकाशन, 2001, पृष्ठ 10
- खेतान, प्रभा, उपनिवेश में स्त्री (मुक्ति कामना की दस वार्ताएँ), नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2003, पृष्ठ 40
- शर्मा, नासिरा, औरत को लिए औरत, नई दिल्ली, सामायिक प्रकाशन, 2003, पृष्ठ 58
- गुप्त, रजनी, लेखः चुनौतियों के भंवर में स्त्री– अस्मिता, http%//in-jagran-yahoo-com/sahitya- पृष्ठ 56
- गुप्ता, उर्मिला, हिन्दी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योगदान, दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, 1966, पृष्ठ 2
- बलराम, समकालीन हिन्दी कहानी, दिल्ली, दिनमान प्रकाशन, 1990, पृष्ठ 24
- ममता कालिया व्यक्तित्व एवं कृतित्व–डा, फैमिदा विजापुरे, पृष्ठ 10